# ठा. श्रीराधानयनानन्द जू

## एवं

# बड़ी सूरमाकुंज

श्रीचैतन्य सेवा समिति

!! श्री श्रीराधानयनानन्दो विजयते!!
!! श्री श्रीनृसिंहाय नमः !!

# दो शब्द

श्रीप्रियाप्रियतम के हृदय कमल से आविर्भूत ठा. श्रीराधानयनानन्द जू की महिमा एवं बड़ी सूरमाकुंज का महत्व व इतिहास के विषय में लोगों को जानकारी बहुत कम है। इसीलिए भक्तजनों के विशेष आग्रह पर यह "ठा. श्रीराधानयनानन्द जू एवं बड़ी सूरमाकुंज" नाम की अति लघु पुस्तिका प्रकाशित की गई जो आपके करकमलों में है।

आशा है कि इसके माध्यम से जिज्ञासु भक्तों को परम मनोहारी लाड़ले ठा. श्रीराधानयनानन्द जू व श्री नृसिंह भगवान का माहात्म्य तथा कुंज के इतिहास के बारे में ज्ञान प्राप्त होगा साथ ही यहाँ से संचालित सेवा प्रकल्पों की भी जानकारी मिलेगी।

- दासानुदास
**प्राणकृष्ण दास**
बड़ी सूरमाकुंज

कृष्णस्य हृदयाम्भोजात् श्रीराधाविग्रहः शुभः।
राधाहृत्कमलात् कृष्ण-मूर्तिश्चाथ प्रकाशिता।।

अर्थ - श्रीकृष्ण के हृदय सरोज से श्रीराधाविग्रह का आविर्भाव हुआ और श्रीराधारानी के हृदयकमल से श्रीकृष्णविग्रह का आविर्भाव हुआ जो समस्त लोकों में अद्वितीय तथा अनुपम है। ये दिव्य विग्रह श्रीश्रीराधानयनानन्दजू के नाम से परम प्रसिद्ध है, जो बड़ी सूरमाकुंज में विराजमान हैं।

# वैष्णव-शोध-पीठ

सन् 2011 में बड़ी सूरमाकुंज में 'वैष्णव शोध-पीठ' की स्थापना हुई। यहाँ के ग्रन्थ मन्दिर में श्रीमत् कृष्णदास कविराज गोस्वामी के हस्तलिखित श्रीचैतन्यचरितामृत की मूल पाण्डुलिपि संरक्षित है।

इसके अलावा ग्रन्थागार में अनेक हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ एवं वेद, पुराण, उपनिषद, दर्शन शास्त्र, श्रीमद्भागवत, महाभारत, रामायण, स्मृति, पुराण आदि धर्मशास्त्र एवं षड् गोस्वामी आदि वैष्णवाचार्यों एवं सन्तों-कवियों द्वारा रचित संस्कृत, हिन्दी, बंगला, उड़िया एवं अंग्रेजी आदि भाषाओं के कई हजार ग्रन्थ हैं।

इसके अतिरिक्त दुर्लभ चित्र, श्री कृष्णदास कविराज गोस्वामी तथा अन्य आचार्यों के कमण्डलु, पीठ, मिट्टी के पात्र, बाँकी (दण्ड) आदि दुर्लभ प्राचीन वस्तुएँ सुरक्षित हैं।

**यहाँ प्रतिदिन दर्शन शास्त्र एवं भक्तिग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन होता हैं।**
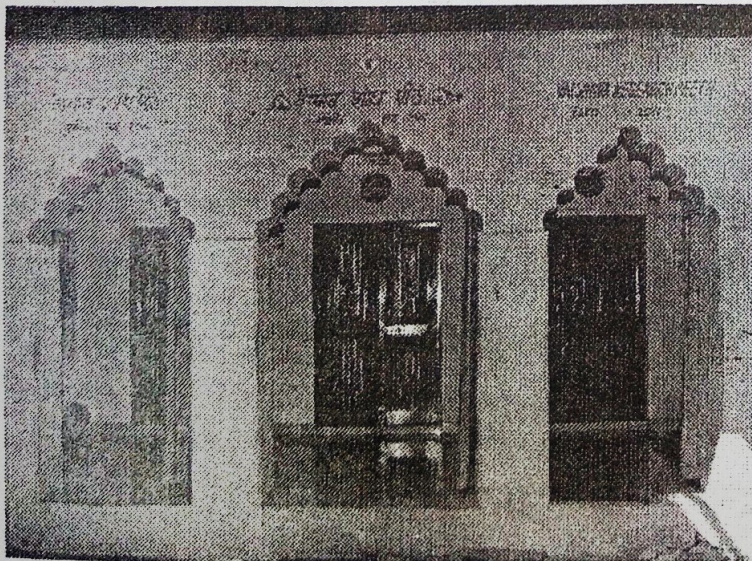
वैष्णव शोध पीठ
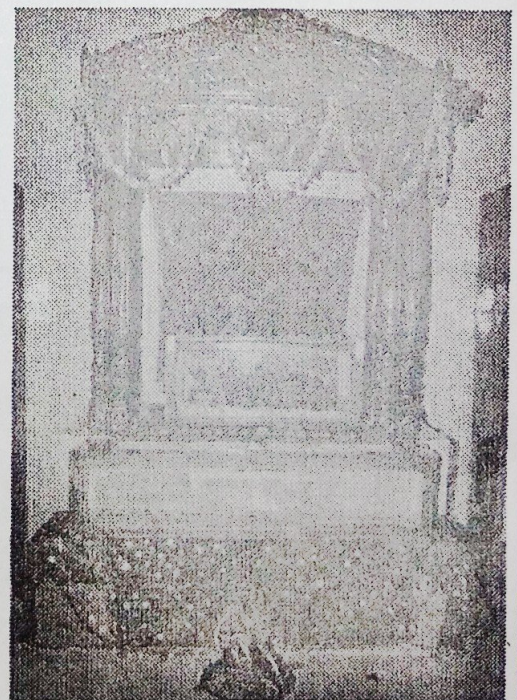
सिंहासन में विराजित मूल श्री चैतन्य चरितामृत

# बड़ी सूरमाकुंज का संक्षिप्त इतिहास

आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व कलियुग पावनावतार प्रेम पुरुषोत्तम भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभु ने जंगल में परिणत विलुप्त वृन्दावन की खोज की थी। उसके पश्चात् उनके परिकर षड्गोस्वामीगण एवं अन्य रसिकाचार्य- सन्तों का आगमन हुआ और प्रारम्भ हुआ मन्दिरों व कुंजों का निर्माण का सिलसिला जो आज भी अनवरत जारी है। मन्दिरों की नगरी वृन्दावन में अनगिनत प्राचीन तथा नवीन मन्दिर-देवालय व आश्रम है।

श्रीवृन्दावन धाम के अति प्राचीन मन्दिर एवं कुंजों में 'बड़ी सूरमाकुंज' का महत्वपूर्ण स्थान है। यह स्थान पहले लता-पताओं से युक्त झुरमुट था। श्रीगौड़ीय वैष्णवाचार्य श्रीमद् रघुनाथ भट्ट गोस्वामी एवं श्रीमत् कृष्णदास कविराज गोस्वामी प्रमुख आचार्यगण इस निर्जन मनोरम वनस्थल में भजन करते थे। आज से 400 वर्ष पूर्व यहीं बैठकर आचार्यवर्य रसिककुल मुकुटमणि श्रीपाद कृष्णदास कविराज गोस्वामी ने भक्ति-साहित्य का अनुपम रत्न श्रीचैतन्य चरितामृत की रचना की थी। बाद में उनके शिष्य श्रीमन्मुकुन्द दास गोस्वामी जी ने यहाँ पर मन्दिर का निर्माण कराकर श्रीविग्रह सेवा स्थापित की है।

यहाँ श्रीराधागोविन्द के हृदय से प्रकटित तथा श्रीराधारानी द्वारा प्रदत्त ठा. श्रीराधानयनानन्दजी महाराज विराजमान हैं, जो अत्यन्त चित्ताकर्षक हैं। स्वयं प्रकट श्रीनृसिंह भगवान् (शालिग्राम) भी विराजमान हैं जो परम चमत्कारी हैं। श्रीमत्कृष्णदास कविराज गोस्वामी के भजन आसन में उनके मनोहारी विग्रह के साथ श्री मुकुन्द दास गोस्वामी एवं श्री रूपकवीश्वर गोस्वामी की समाधियाँ विद्यमान हैं। यह स्थान श्री गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय की एक प्रमुख आचार्यपीठ है।

सम्वत् 1640 में मुल्तान (पंजाब अब पाकिस्तान) का एक धनी परिवार में आविर्भूत गोस्वामी श्री मुकुन्द दासजी महाराज को स्वप्न में श्रीगोविन्द भगवान् ने दर्शन देकर वृन्दावन बुलाया था। तब वे मात्र 16 वर्ष के थे। स्वप्नादेश पाकर वे गृह त्यागकर वृन्दावन चले आये। यहाँ आकर श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामी के शिष्य बनकर तीव्र साधना में लग गये।

एक बार गोस्वामी श्रीमुकुन्ददासजी श्रीराधागोविन्द प्रभु के दर्शन का संकल्प लिये अन्न-जल त्यागकर मात्र व्रजरज खाकर कठोर साधना में लीन हुए। रोते-रोते उनकी नेत्रज्योति चली गई। उनकी मरणासन्न दशा देख परम करुणामयी श्रीराधारानी का हृदय दया से द्रवित हो गया और रोती हुईं श्रीश्याम सुन्दर से कहने लगीं-"प्रियतम ! मुकुन्द पर अब भी कृपा नहीं करोगे क्या? इसे इस तरह मारने के लिए मुलतान से बुलाये थे क्या?" तब श्रीगोविन्द मुस्कुराते हुए बोले-"किशोरी जू ! तुम्हारे आदेश के बिना मैं कैसे कृपा कर सकता था। चलो, अब हम दर्शन देते हैं।" ऐसा कहकर श्रीमुकुन्द दास गोस्वामी के समीप आकर बोले-"मुकुन्द ! उठो, हम आये हैं, दर्शन करो।" श्रीराधागोविन्द जू की अमृतवाणी सुनकर उनमें दिव्य शक्ति का संचार हुआ, उठकर बैठे। परन्तु नेत्रज्योति चली जाने से कुछ दिख नहीं रहा था। तब किशोरी जू ने कृपाकर उनकी आँखों में सुरमा (अंजन) लगा कर दिव्यदृष्टि प्रदान की और साथ ही अपने हृदय से श्रीकृष्ण विग्रह एवं श्रीश्यामसुन्दर ने अपने हृदय से राधाजी का विग्रह प्रकट कर प्रदान किये। इस सन्दर्भ में निम्न दोहा प्रसिद्ध है-

**राधा प्रगटी लाल हिय, श्यामा नन्दकिशोर।**<br>
**राधानयनानन्द लखि, मुकुन्द भये रसभोर॥**

सन् 1620 में बसन्त पंचमी के दिन प्रगट हुए थे।

यह परम मनोहारी युगलविग्रह आज भी सुरमाकुंज में सेवित हैं। श्रीराधारानी द्वारा सुरमा लगा देने के कारण व्रजवासी उन्हें सुरमा वाले

बाबा कहते थे और तभी से मन्दिर का नाम पड़ गया 'सुरमा कुंज'।

उनके पश्चात् सन् 1664 ई. में श्रीरूप कवीश्वर गोस्वामी को उक्त ठाकुर सेवा मिली, वे श्री मुकुन्द दास गोस्वामी के प्रधान शिष्य थे। श्रीरूप कवीश्वर गोस्वामी जी प्रकाण्ड विद्वान थे। उनकी अद्वितीय विद्वत्ता और चरम त्याग-वैराग्य एवं भजन निष्ठा से विमुग्ध होकर जयपुर नरेश ने उन्हें व्रजभक्ति क्षेत्र के शूरपुरुष घोषित करते हुए 'सूरमा' उपाधि प्रदान की थी। इस कारण 'सुरमाकुंज' बाद मे 'सूरमा कुंज' के नाम से अधिक प्रसिद्ध हो गयी।

सन् 1669 में जब वृन्दावन में औरंगजेब का आक्रमण हुआ। उसकी सेनायें गोविन्ददेव मन्दिर को क्षतिग्रस्त कर रही थीं। यहाँ के साधु सन्त भयभीत हो पलायन कर रहे थे। तब श्री रूपकवीश्वर गोस्वामी ने साधु-महात्मा और ब्रजवासियों को साहस प्रदान किया एवं अपनी दिव्य शक्ति से सेना को मन्दिर ध्वस्त करने से रोका। उनके अलौकिक प्रभाव के कारण सेना को वापस जाना पड़ा।

इस कुंज के आचार्यों एवं सन्तों ने उत्कट वैराग्य, तीव्र साधना तथा व्रजभक्ति व संस्कृति की रक्षा के निमित्त प्राणों की आहुतियाँ दी हैं। विधर्मियों (सन् 1757 में अहमदशाह अब्दाली) के आक्रमण काल में आक्रान्ताओं से भी यहाँ के साधु-सन्तों ने संघर्ष किया। सूरमाकुंज का अतीत अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा है। श्रीराधाकृष्ण भक्ति के प्रचार-प्रसार में सूरमाकुंज का भारी योगदान रहा। इस कुंज की व्रजमण्डल मंडल में 52 शाखायें थी। उन बावन कुंज-मन्दिरों में सूरमा कुंज मुख्य गद्दी है। इसीलिये इसे **'बड़ी सूरमाकुंज'** कहते हैं। सूरमा शाखा के विद्वान-कवियों ने अनेक छोटे-बड़े ग्रन्थों और प्रचुर पदों की रचना की है जो अधिकतर रख-रखाव के अभाव मे नष्ट हो गये 'सुरक्षित बचे सैकड़ों हस्तलिखित ग्रन्थ वृन्दावन शोध संस्थान को प्रदान कर दिये गये। कुछ पाण्डुलिपियाँ सूरमाकुंज स्थित ग्रन्थ मन्दिर में सुरक्षित है, इनमें मुख्य है श्रीकविराज गोस्वामी द्वारा लिखित श्रीचैतन्यचरितामृत की

17 वीं सदी में बड़ी सूरमाकुंज के समर्थ आचार्यों और सन्तों ने व्रजमण्डल के साथ-साथ व्रज से सुदूर बंगाल, बिहार, असम, त्रिपुरा, ओड़िसा आदि क्षेत्रों में श्रीकृष्णभक्ति की पावन धारा बहायी। सम्पूर्ण भारत में इसकी करीब 360 मन्दिर और आश्रम स्थापित हुए थे। प्रचार-प्रसार की दृष्टि से वह काल स्वर्णयुग था। उन दिनों सूरमाकुंज का गौरव चरम शिखर पर था। यह गौरव 18 वीं सदी तक अक्षुण्ण रहा। परन्तु 19 वीं सदी के प्रारंभ में प्रचार-प्रसार शिथिलता आने लगी। बहुत से मठ-मन्दिर जीर्ण-शीर्ण हो गये एवं देखभाल के अभाव में नष्ट होने लगे। 1879 में इस पीठ में विराजमान हुए बारहवें आचार्य श्रीव्रजमोहन दास गोस्वामी जी महाराज। वे प्रकाण्ड विद्वान तथा सिद्ध सन्त थे। उन्होंने नष्ट होने के कगार पर स्थित अनेक मठ-मन्दिरों को बचा लिया एवं सम्प्रदाय में नवीन चेतना संचारित की। इनके पश्चात् तपोमूर्ति महान्त श्रीशुकदेवदास गोस्वामी जी महाराज तेरहवें आचार्य के रूप में 1981 तक विराजमान रहे। वर्तमान में उनके प्रिय शिष्य सद्गुरुदेव महान्त श्रीहरिदासजी महाराज चौदहवें आचार्य के रूप में विद्यमान हैं। वे सूरमाकुंज के प्राचीन गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने लिये सतत प्रयासरत हैं। इनके सुयोग्य शिष्य पन्द्रहवें आचार्य श्रीप्रेमदास शास्त्री जी महाराज इस समय 'वृन्दावन सन्देश' नामक पत्रिका का उत्कृष्ट प्रकाशन 25 वर्ष से लगातार कर रहे हैं। श्रीमद् भागवत, श्रीचैतन्य चरितामृत एवं भक्तिग्रन्थों पर कथा-प्रवचन तथा अन्यान्य सद्ग्रन्थ-प्रकाशन के माध्यम से श्रीकृष्णभक्ति धारा को निरन्तर प्रवाहित कर रहे हैं। वे प्राचीन आचार्य परम्परा की रक्षा के निमित्त प्रयासशील हैं।

# बधाई

(1)

नयनानंद प्रगटे आज, बधाई बाज रही।
अरूण अधर रतनारे नैना,
देखे बिनु नहिं आबत चैना।
मधुर-मधुर लागत है वैना,
युगल छवि को रूप निरखिकै, सुधि-बुधि अपनी भुलाय रही।। नयनानंद.....
घर-घर ते नर नारी आवैं,
नाचै गावैं धूम मचावैं।
हिलमिल के जयकार लगावैं,
ऐसो आनंद सूरमाकुंज में, आयो न ये बात कही।। नयनानंद.....
श्री मुकुन्द अति हरषायो,
नाना भाँति लाड़ लड़ायो।
जन-जन को ये दरस करायो,
मन्द मन्द मुस्कान प्रभु की, जग के होश उड़ाय रही।। नयनानंद.....
रूप कवीश्वर अति विद्वाना,
गुरु सेवा में परम सुजाना।
उर अभिमान न परस लगाना,
संतनि की पदरेनू में नित, 'दास भक्तमाल' नहाय रही।। नयनानंद.....

(2)

प्रगट भए राधानयनानंद।
जिन निरख्यौ श्री मुकुंद प्रभु जू, ज्यौं चकोर श्री चंद।।
रूप कवि कौ दरसन करिकै, मिटौ जगत भव फंद।
कृष्ण वल्लभ अति लाड़ लड़ायौ, छोड़ जगत के द्वन्द।।
श्री शुकदेव सदा मदमाते, निरखत मुख अरविन्द।
नाना राग भोग आरोगत, रीसत प्रेम मकरन्द।।
जे नर अजहुँ निहारत पल भर, उर बाढ़त आनन्द।
'भक्तमाल' की आस यही प्रभु, निरखूँ श्री गोविन्द।।



(3)

अनुपम नैनानन्द निराले।
तिरछी चितवन मोर मुकुट सिर लकुटी वंशीवाले।।
साज शृंगार मनोहर जिनके लट लटकत घुंघराले।
रसिकनि जीवन धन प्रगटाये बाबा सुरमा वाले।।
रसिक रूप रस पान करत लै भरि भरि लोचन प्याले।
'राधाचरणदास' रसिकजन होत निरखि मतवाले।।

(4)

मुकुन्द के दुलारे राधानैनानन्द प्यारे।
रसिकन के प्राणधन नैनन के तारे।।
बरसत रस अंगनि सों नैन अनियारे।
श्यामल त्रिभंग छवि टेढ़ी टांग वारे।।
सोहत सिर मोर मुकुट लट घुंघरारे।
सुरमाकुलचन्द्र सारे जग से हैं न्यारे।।
गोपीजन बल्लभ गोपाल वंशीवारे।
'राधाचरणदास' जीवन तेरे ही सहारे।।

(5)

सब चलो रे सुरमा कुञ्ज वहाँ रस रंग बधाई है।
प्रगटे हैं नैनानन्द खुशी जन जन में छाई है।।
है रसिकनि हिय आनन्द आज तिथि अनुपम आई है।
सब कर रहे जय जयकार तुमुल ध्वनि अम्बर छाई है।।
बने हैं बन्दवार पताका ध्वजा सजाई है।
है शोभा अपरम्पार, निरखि मति गति बौराई है।।
कोई गान करत कोई तान धरत सब कहत बधाई है।
बाबा लै लै वस्तु गमन मन सकल लुटाई है।।
लूटत प्रमुदित भेद न मन को लोग लुगाई है।
'राधाचरण' मन मोद दिवस यह अति सुखदायी है।।

❖❖❖

श्रीचैतन्य सेवा समिति बड़ी सूरमा कुंज से प्रकाशित :-

# वृन्दावन-सन्देश

त्रैमासिक पत्रिका (हिन्दी)

**श्रीभगवद्‌भक्ति-दर्शन-लीला, भक्तगाथा एवं नई जानकारियों से परिपूर्ण**

इस पत्रिका के नियमित अध्ययन से दिव्य रसास्वादन का लाभ उठावें।

## श्रीचैतन्य सेवा समिति से प्रकाशित भक्तिग्रन्थ

- श्रीचैतन्य चरितामृत (मूल मात्र)
- श्रीगौड़ीय साधन पद्धति
- श्रीवृन्दावन विरूदावली
- चतु:श्लोकी भागवत
- देवर्षि और महर्षि का मधुर मिलन
- श्रीकृष्णदास कविराज पंचशती स्मारिका
- ब्रज भक्तमाल
- सुख-शान्ति प्रेम
- श्रीरसिकाचार्यत्रयी
- श्रीसाधन भक्ति कौमुदी (बंगला)
- श्रीसहस्रनाम स्तोत्रपंचकम् (बंगला)
- श्रीगौरगोविन्द लीलामृत (प्रथम खण्ड) (बंगला)
- श्रीगौरगोविन्द लीलामृत (द्वितीय खण्ड) (बंगला)
- श्रीरूप चरितामृत (बंगला)
- सूरमाकुंज ओ आचार्यगण (बंगला)
- महत् प्रसंग (बंगला)
- Shripad Roop Goswami and His Followers
- Shri Shri Radhanayananandaju & Badi Surma Kunj
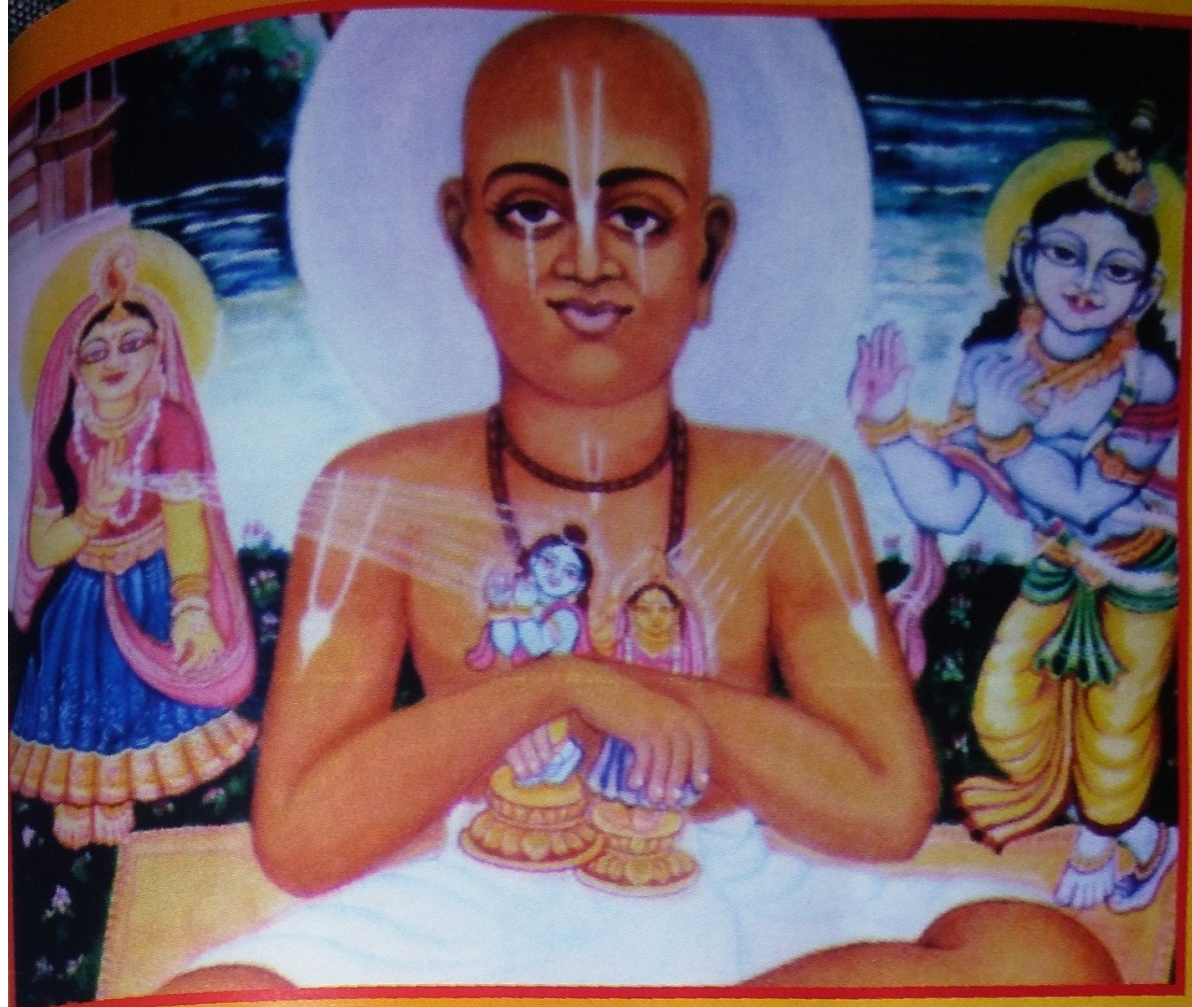
श्री प्रिया-प्रियतमजू अपने श्री विग्रह श्री मुकुन्ददास गोस्वामी जी को प्रदान करते हुए
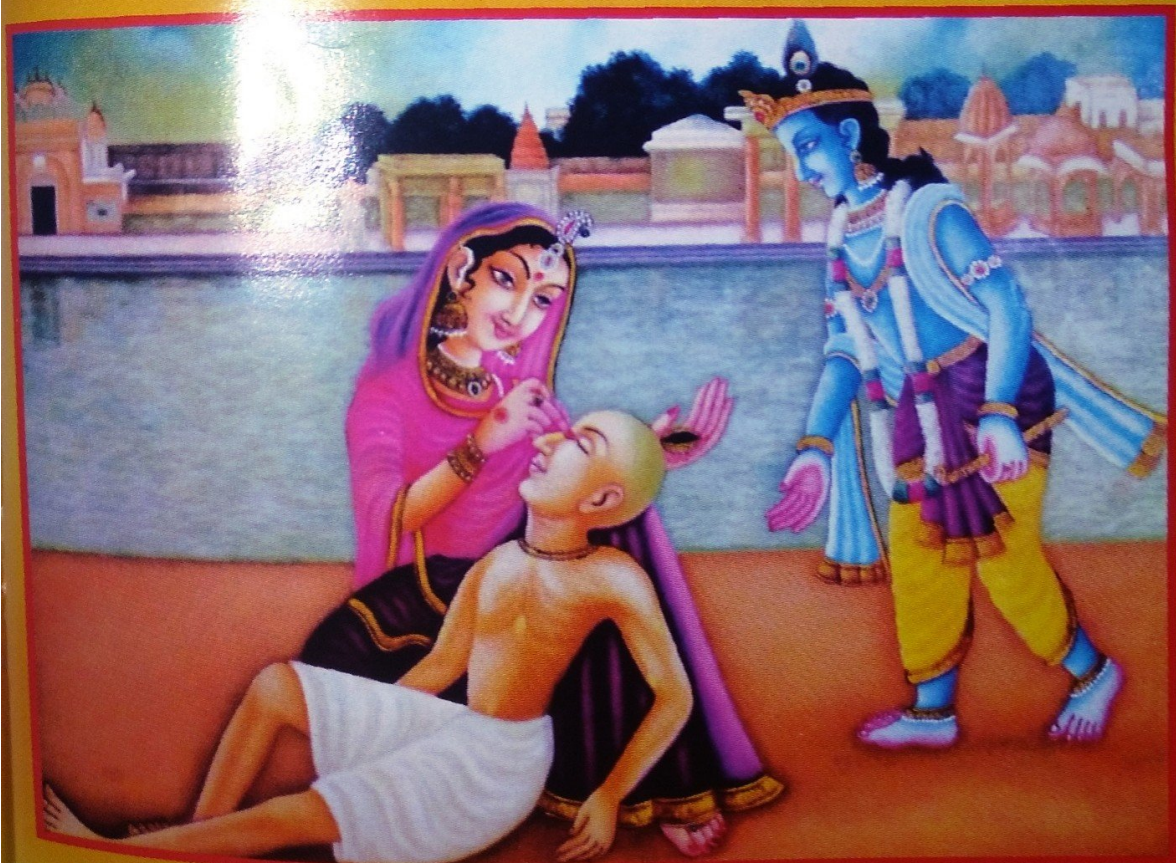
रसिकाचार्य श्रीमुकुन्द दास गोस्वामी जी के नेत्रों में सूरमा लगाती हुईं श्रीराधारानी

श्री गौड़ीयवैष्णवाचार्य श्री षड् गोस्वामिपाद
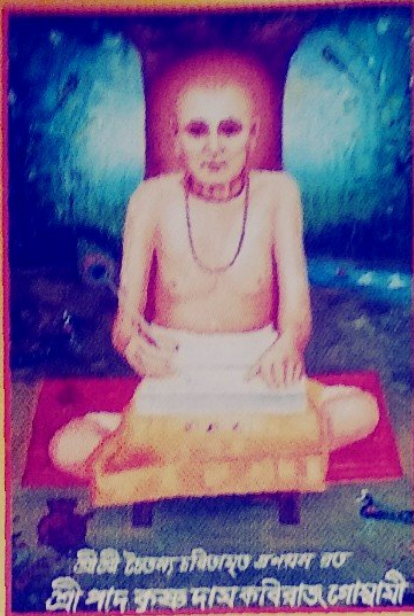
श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामी
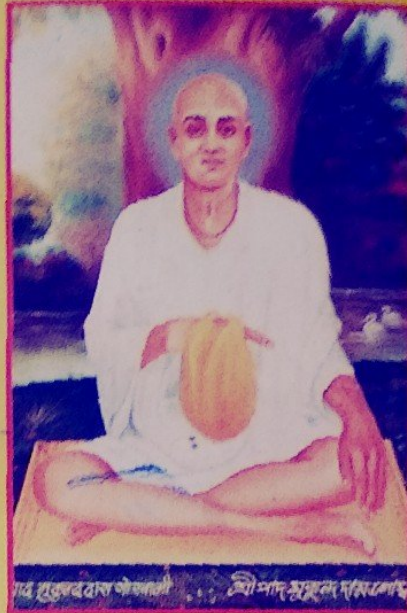
श्रीमुकुन्ददास गोस्वामी

श्रीरूपकवीश्वर गोस्वामी
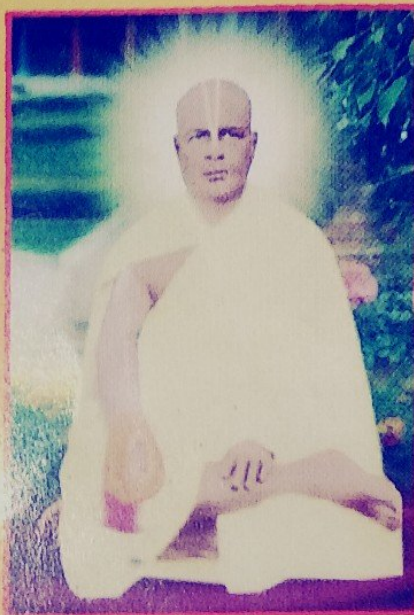
गोस्वामी श्रीब्रजमोहनदास जी महाराज
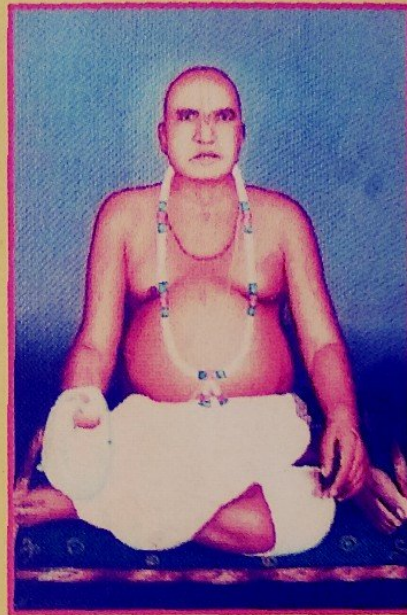
गोस्वामी श्रीशुकदेवदास जी महाराज

महान्त श्रीहरिदास जी महाराज